Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **04.09.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

जब ख़ुदा तआला के शुक्र की आदत पैदा हो जाए तो फिर अल्लाह तआला और अधिक फ़ज़्ल फ़रमाता है तथा इन्हीं फ़ज़्लों को देखते हुए एक वास्तविक मोमिन फिर क़ुर्बानियों के लिए तय्यार भी रहता है और करता भी है। आज इस ज़माने में इस विषय का परम बोध हम अहमदियों को है जिनके सामने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़माना भी है तथा आपके सच्चे ग़ुलाम का ज़माना ज़ी है और उसवः (कल्याणकरी आचरण) है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

एक सांसारिक व्यक्ति को जब यह कहा जाए कि यदि किसी के भीतर वास्तविक तक़वा पैदा हो जाए तो उसे संसार की सम्पूर्ण समृद्धि मिल जाती है तो निस्संदेह वह यही कहेगा कि ये सारी व्यर्थ की बातें हैं तथा धर्म के नाम पर अपने आस पास लोगों को एकत्र करने हेतु लोग ये बातें करते हैं। हाँ, यह भी ठीक है कि आजकल धर्म के नाम पर कुछ लोग ऐसी बातें करते हैं और उनके निजि स्वार्थ होते हैं परन्तु न तो उनमें तक़वा होता है और न ही उनके पीछे चलने वालों में तक़वा होता है परन्तु इसकी अपेक्षा हम देखते हैं कि नबी तथा उनकी जमाअतें वास्तविक बोध रखती हैं तक़वा का। इस संसार में रहते हुए, सांसारिकता में लगे हुए होने के बावजूद तक़वा की तलाश करते हैं और तक़वा के मार्ग पर चलते हैं। मुझे सैंकड़ों पत्र आते हैं जिनमें इस बात की अभिव्यक्ति होती है कि अल्लाह तआला हममें तथा हमारी संतानों में तक़वा पैदा करे। यह बदलाव निःसंदेह उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने तथा अपनी बैअत का एहद निभाने के आभास के कारण है। इस अभिलाषा ने और अल्लाह तआला से सम्बंध, प्रेम तथा उसके भय ने उन्हें भौतिक वस्तुओं से निश्चिंत तो किया है परन्तु सांसारिक समृद्धि से वे वंचित नहीं रहे। अल्लाह तआला नबियों को भी अपनी कृपाओं का वरदान प्रदान करता है तथा उनके वास्तविक मानने वालों तथा शिक्षानुसार चलने वालों को भी इन संसारिक वस्तुएँ का वरदान देता है। कई बार कुछ अस्थाई संकट होते हैं परन्तु फिर अल्लाह तआला की कृपा होती है और परिस्थितियाँ सुधर जाती हैं। इसी प्रकार मुत्तक़ी में संतोष भी होता है और कनाअत के कारण वह छोटी मोटी तंगियों को सहन भी करता है और फिर अल्लाह तआला के जो फ़ज़्ल होते हैं, जो कृपाएँ होती हैं उसको व्यक्त भी करता है। फिर उसके जो अल्लाह तआला उसको देता है, थोड़े पर भी ख़ुदा तआला के शुक्र की आदत पैदा होती है मुत्तक़ी में और जब ख़ुदा तआला के शुक्र की आदत पैदा हो जाए तो फिर अल्लाह तआला और अधिक फ़ज़्ल फ़रमाता है तथा इन्हीं फ़ज़्लों को देखते हुए एक वास्तविक मोमिन फिर क़ुर्बानियों के लिए तय्यार भी रहता है और करता भी है। आज इस ज़माने में इस विषय का परम बोध हम अहमदियों को है जिनके सामने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़माना भी है तथा आपके सच्चे ग़ुलाम का ज़माना ज़ी है और उसवः (कल्याणकरी आचरण) है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद इस बात को बयान करते हुए एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि देखो रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से लोगों ने सब कुछ छीन लिया तथा इसी प्रकार सहाबा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम से भी छीन लिया परन्तु ख़ुदा तआला की तुलना में उन्होंने किसी बात की चिंता नहीं की। अन्ततः ख़ुदा तआला ने उन्हें सब कुछ दिया। इसी प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ज़ी ख़ुदा तआला के लिए सब कुछ छोड़ा और इसके बावजूद कि अपने परिवार की सम्पत्ति में आधे भाग के मालिक थे, आपकी ज़ाभी जिन्हें ख़ुदा तआला ने बाद में अहमदी होने की तौफ़ीक़ दी, समझती थीं कि आप बिना परिश्रम के खाने वाले हैं और बड़े संकट रहे थे परन्तु फिर भी ख़ुदा तआला ने आपको सब कुछ दिया। इस हालत का चित्रण आपने इस प्रकार किया है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने एक छंद में कि-

लफ़ाज़ातल मवाइद काना अकली वसुरत अलयौम मुतआमुल अहाली

अर्थात- एक ज़माना था जब मैं दूसरों के टुकड़ों पर जीवन व्यतीत करता था परन्तु अब ख़ुदा ने मुझे यह तौफ़ीक़ दी है कि हज़ारों लोग मेरे दस्तर ख़्वान पर खाना खाते हैं।

आज हम अहमदियों का ईमान निःसंदेह इस बात से बढ़ता है जब हम आपके आरम्भिक ज़माने तथा बाद के ज़माने को देखते हैं। इस दशा का और अधिक चित्रण करते हुए एक स्थान पर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने इस प्रकार भी बयान फ़रमाया कि हज़रत मसीह

मौऊद अलैहिस्सलाम जब पैदा हुए तो आपके माँ-बाप ने आपकी पैदायश पर प्रसन्नता व्यक्त की होगी परन्तु जब आपकी आयु बड़ी हो गई तथा आपके ज़ीतर संसार के प्रति रुचिहीनता पैदा हो गई तो आपके पिता आपकी इस दशा को देखकर आहें भरा करते थे कि हमारा बेटा किसी काम के योग्य नहीं है। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने एक वृत्तांत सुनाया कि एक सिक्ख ने आपको बताया था कि हम मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब के पास गए और उनको कहा कि आपके पिता जी को इस विचार से बड़ा कष्ट होता है कि उनका छोटा बेटा अपने बड़े भाई की रोटियों पर पलेगा, कोई काम नहीं करता, उसे कहो कि मेरे जीवन में ही कोई काम कर ले, तो ये कहते हैं कि उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कहा कि आप अपने वालिद की बात क्यूँ नहीं मान लेते? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उत्तर दिया कि मेरे वालिद साहब तो यूँ ही दुखी होते हैं, उन्हें मेरे भविष्य की क्यूँ चिंता है, मैंने तो जिसकी नौकरी करनी थी कर ली। कहते हैं- हम वापस आ गए और मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहब से आकर यह पूरी बात कह दी। मिर्ज़ा साहब ने कहा कि यदि उसने यह बात कही है तो ठीक है क्यूँकि वह झूठ नहीं बोला करता। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का आरज़्भिक दौर था और फिर अभी अन्त नहीं हुआ परन्तु जो अस्थाई अन्त दिखाई देता है वह यह है कि आपके निधन के समय हज़ारों हज़ार लोग आप पर बलिदान होने वाले उपस्थित थे तथा उन लोगों के अतिरिक्त जो लंगर में सेवा करते थे प्रतिदिन दो ढाई सौ लोग खाना खाते थे। आपके पास जब कोई मिलने वाला आता, आरज़्भिक ज़माने में और अपनी भाभी को खाने के लिए कहला भेजते तो वे आगे से कह देतीं कि वह यूँ ही खा पी रहा है, काम काज तो कोई करता नहीं। इस पर आप अपना खाना उस मेहमान को खिला देते और आप उपवास कर लेते अथवा थोड़े से चने चबा कर बसर कर लेते। ख़ुदा का चमत्कार है, हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं- वही भाभी जो उस समय आपको हीन भावना से देखती थीं बाद में मेरे हाथ पर अहमदियत में प्रविष्ट हुईं। अतः अल्लाह तआला की ओर से जब कोई काम शुरू किया जाता है तो उसका आरज़्भ विशाल दिखाई नहीं दिया करता परन्तु उसके अन्त में दुनिया चकित हो जाती है। आज भी हम देखते हैं कि क़ादियान ही नहीं बल्कि क़ादियान से बाहर विश्व के अनेक देशों में आपका लंगर चल रहा है। उस समय तो सज़्ज़व है कि दो तीन तंदूरों पर रोटी पकती हो और लंगर चल रहा था और आज हम देखते हैं कि आपके लंगरों में रोटियों के प्लांट लगे हुए हैं। क़ादियान में भी, रब्वा में, यहाँ लंगर में भी लाखों रोटियाँ एक समय में पकती हैं।

अतः क्या वह ज़माना था कि एक मेहमान आता था तो आप अपना खाना उसे दे देते थे और स्वयं अनशन करते थे और कहाँ आज कि दुनिया के विभिन्न देशों में हज़ारों लोग आपके दस्तर ज़्वान से खाना खा रहे हैं और भी चरम सीमा नहीं है अभी तो इन लंगरों ने दुनिया के विभिन्न देशों में फैलना है, इन्शाअल्लाह। लाखों करोड़ों लोगों ने आपके दस्तर ज़्वान से खाना खाना है इसी प्रकार लाखों और करोड़ों ने आपको मानने के बाद तक़वा में भी बढ़ना है। आज हमें दुनिया कमाने वाले अहमदियों में जो क़ुर्बानी के स्तर दिखाई देते हैं, यह भी कोई चरम सीमा नहीं है इसमें भी इन्शाअल्लाह तआला वृद्धि होती चली जानी है। अतः एक लंगर की व्यवस्था को ही यदि कोई विचार करने वाला देख ले और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आरज़्भिक परिस्थिति को ज़माने के सामने रखे यही आपकी सत्यता का निशान बन जाता है, अति विशाल निशान है और हमारे ईमानों में तो निःसंदेह वृद्धि का कारण बनता है और फिर यदि हम देखते हैं कि यदि इस पूरी व्यवस्था को चलाने के लिए आर्थिक बलिदान की आत्मा जमाअत के लोगों में उत्पन्न हुई है तो यह भी उसी तक़वा का परिणाम है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जुड़ कर हममें पैदा हुआ। अल्लाह तआला हममें से प्रत्येक को और अधिक वास्तविक तक़वा पैदा करने की ओर अग्रसर करे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पवित्र जीवनी की विज़िन्न घटनाओं तथा कुछ वृत्तांतों पर प्रकाश डालते हैं, उनमें से बड़े सूक्ष्म बिन्दु निकालते हैं और वे भी हमारे ईमान में वृद्धि का कारण बनते हैं तथा विवेक में उन्नति होती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के खाने के ढंग का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के खाने का ढंग बड़ा अनोखा था मैंने किसी अन्य व्यक्तिकको इस प्रकार खाते हुए नहीं देखा। आप पहले फुल्के से एक टुकड़ा अलग करते अर्थात बारीक रोटी, चपाती जो होती है, फिर निवाला बनाने से पहले आप उंगलियों से उसके छोटे छोटे कण बनाते जाते और मुंह से सुब्हानल्लाह कहते जाते और फिर उनमें से एक छोटा सा टुकड़ा लेकर सब्ज़ी से छूकर मुंह में डालते। आपकी यह आदत ऐसी बढ़ी हुई थी कि देखने वाले आश्चर्य करते और कुछ लोग तो समझते थे कि आप रोटी में से हलाल कण खोज रहे हैं परन्तु वास्तव में उसमें यही भावना होती थी कि हम खाना खा रहे हैं और ख़ुदा का दीन तड़प रहा है। हर एक निवाला आपके गले में फंसता था और सुब्हानल्लाह सुब्हानल्लाह कह कर आप जैसे अल्लाह तआला के समक्ष विवशता प्रकट करते थे कि तू ने यह चीज़ हमारे साथ लगा दी है अन्यथा दीन का खाना अर्थात आहार इंसान की आवश्यकता है। अन्यथा दीन के संकट के समय यह खाना खाना कदापि उचित नहीं था। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं- वह आहार भी जो आपका था एक प्रकार का संघर्ष लगता है। यह एक लड़ाई होती थी उन सूक्ष्म तथा मोहक भावनाओं की बीच जो इस्लाम तथा दीन के समर्थन के लिए उठ रहे होते थे और उन आवश्यताओं के बीच जो ख़ुदा तआला की ओर से विधि के विधान को सज़्पूर्ण करने के लिए स्थापित किए गए थे, आपका खाना भी एक प्रकार की विवशता थी, वास्तव चिंता आपको दीन के समर्थन की थी, इस्लाम की प्रगति की थी। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह

उदाहरण हमें इस ओर ध्यान दिलाता है कि हम जब अल्लाह तआला के वरदानों को उपयोग में लाएँ तो उसका शुक्र करें। एक तो उसकी तसबीह (प्रशंसा, स्तुति) करें तो साथ ही दीन की हालत के दर्द को भी अनुभव करें। इसके लिए प्रयासरत हों कि किस प्रकार हमने दीन के प्रचार प्रसार और तबलीग़ में भागीदार बनना है। फिर इस खाने के ढंग से जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का था, तसबीह के विषय की और अधिक व्याज़्या क़रआन करीम की आयत के इस अंश से कि يسبح لله ما في السموٰت وما في الارض अर्थात- धरती व आकाश की प्रत्येक वस्तु ख़ुदा तआला की तसबीह करती है, हज़रत मुस्लेह मौऊद ने बिन्दु निकाला है, फ़रमाते हैं- जब ख़ुदा तआला यह कहता है कि يسبح لله ما في السموٰت وما في الارض कि ज़मीन व आसमान की हर चीज़ तसबीह कर रही है तो इसका अर्थ यह है कि तुम इस तसबीह को सुनो। अतः मालूम हुआ कि यह तसबीह ऐसी है जिसे हम सुन भी सकते हैं। एक तो सुनना तुच्छ श्रेणी का है तथा एक उच्च श्रेणी का। परन्तु उच्च श्रेणी का सुनना उन्हीं लोगों को प्राप्त हो सकता है जिनके वैसे ही कान और आँखें हों। इसी लिए मोमिन को यह कहा जाता है कि जब वह खाना शुरू करे तो बिस्मिल्लहिर्रहमानिर्रहीम कहे, खाना समाप्त करे तो अल्हमदुलिल्लाह कहे। कपड़ा पहने अथवा कोई अन्य दृश्य देखे तो उसी के अनुसार तसबीह करे। तो इस प्रकार मोमिन का तसबीह करना क्या है? वह इन चीज़ों की तसबीह का सत्यापन करना है, वह कपड़े और खाने की प्रशंसा तथा अन्य वस्तुओं की तसबीह का सत्यापन करता है।

जब इंसान खाना खाते हुए बिस्मिल्लाह पढ़ता है, खाना समाप्त करके अल्हमदुलिल्लाह पढ़ता है, कपड़ा पहनते हुए दुआ करता है और अल्लाह को याद रखता है तो ये चीज़ें जो इंसान स्वयं कर रहा होता है, वास्तव में यही तसबीह है जो इन चीज़ों की ओर से हो रही होती है। इन को देखकर जब इंसान धन्यवाद करता है तो यही धन्यवाद उन चीज़ों की ओर से भी हो रहा है। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि और कितने हैं जो इसके अनुसार करते हैं। वे रात दिन खाते और पीते हैं, पहाड़ों पर से गुज़रते हैं, नदियों को देखते हैं, हरी भरी घाटियों को देखते हैं, वृक्षों एंव खेतों को लहलहाते हुए देखते हैं, पक्षियों को चहचहाते हुए सुनते हैं परन्तु उन लोगों के दिलों पर क्या प्रभाव होता है। क्या उनके दिलों में भी इन चीज़ों को देखकर तसबीह की भावना पैदा होती है। अतः प्रत्येक शुक्रगुज़ारी जो है, जब वह इंसान किसी चीज़ की करता है अथवा अल्लाह तआला की सृष्टि को देखता है तो सुब्हानल्लाह पढ़ता है तो जो इंसान की तसबीह है वास्तव में वह उन चीज़ों की तसबीह है जिसकी अभिव्यक्ति इंसान के मुंह द्वारा हो रही होती है, इस बिन्दु को समझने की आवश्यता है। अतः तसबीह के इस ढंग को भी हमें अपनाने का प्रयास करना चाहिए बल्कि तक़वा तो यही है कि इस प्रकार की तसबीह हमारा नियम बन जाए।

इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस्लाम पर आक्रमण करने वालों का मुंह बन्द करने के लिए तथा इस्लाम की सुन्दरता प्रकट करने के लिए भेजा है। इस विषय में भी एक घटना का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मस्जिद में बैठे हुए थे कि एक ईसाई आया और उसने कहा कि आप तो कहते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम की भाषा उज़्मुल अलसिना (समस्त भाषाओं की माँ) है जबकि मैक्स मूलर आदि ने लिखा है कि जो भाषा उज़्मुल अलसिना (समस्त भाषाओं की जननी) होती है, वह संक्षिप्त होती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- हम तो मैक्स मूलर के इस फ़ारमूले को नहीं मानते कि उज़्मुल अलसिना संक्षिप्त होती है परन्तु चलो, विवाद को छोटा करने के लिए हम इस फ़ारमूले का मान लेते हैं तथा अरबी भाषा को देखते हैं कि क्या वह इस आधार पर पूरी उतरती है कि नहीं। उस व्यक्ति ने यह भी कहा था कि अंग्रेज़ी भाषा, अरबी भाषा की तुलना में अत्यंत उच्च श्रेणी की है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अंग्रेज़ी नहीं जानते थे लेकिन अल्लाह तआला ने आपकी ज़बान पर ऐसे शब्द जारी फ़रमा दिए कि आरोप कर्ता स्वयं ही फंस गया। आपने फ़रमाया- अच्छा, आप बताएँ कि अंग्रेज़ी में ÷मेरे पानी÷ को क्या कहते हैं? उसने कहा, My waterआपने फ़रमाया अरबी में तो केवल माई कहने से ही अर्थ पूरा हो जाता है। अब आप बताएँ कि My water अधिक संक्षिप्त है अथवा माई। वह बड़ा लज्जित होकर निरुत्तर हो गया और कहने लगा कि फिर तो अरबी भाषा ही संक्षिप्त हुई। यही स्थिति क़ुरआन करीम की है अल्लाह तआला रसूल-ए-करीम से वादा करता है कि वह आपको दुश्मनों के हमलों से बचाएगा। जब दुश्मन ने तलवार से आक्रमण किया तो उसने उसकी तलवार को बिना धार का कर दिया, दुश्मन की तलवारें टूट गईं और जब उसने इतिहास के द्वारा हमला किया तो ख़ुदा तआला ने ऐसे मुसलमान खड़े कर दिए जिन्होंने इतिहास की पुस्तकों में छान बीन करके दुश्मन के आरोपों को रद्द कर दिया तथा स्वयं विरोधियों की पुस्तकों को खोल कर बताया कि वे जो आपत्तियाँ इस्लाम पर कर रहे हैं वे उनके अपने धर्म पर भी पड़ते हैं और जो भाग क़ुरआन-ए-करीम तथा हदीसों से सम्बंध रखता है उसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट कर दिया।

अतः आज भी जो लोग इस्लाम पर आपत्ति करते हैं, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तर्क-शास्त्र से हम उसका मुंह बन्द कर सकते हैं इस लिए इस ओर हमें ध्यान देना चाहिए। अल्लाह तआला अपने दीन के समर्थन में स्वयं ही निशान भी दिखाता है तथा तर्क भी बताता है। कुछ लोग जो बुद्धिजीवी होते हैं, उनके और अधिक सीने भी खोलता है परन्तु कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो कम ज्ञान होने के बावजूद ज्ञानी बनने की लालसा में अनावश्यक बातें कर जाते हैं तथा कई बार जिनके द्वारा कुछ कठिनाईयाँ पैदा होती हैं बल्कि

विरोधियों को उपहास करने का अवसर मिलता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि ऐसे लोग जो हैं दोनों ओर न्यूनाधिक करते है कोई नियम या आधार नहीं होता यद्यपि वास्तविक मार्ग बीच का मार्ग ही है। इंसान को बदलाव स्वीकार करने के लिए तय्यार रहना चाहिए परन्तु बदलाव पैदा करना ख़ुदा तआला के हाथ में है तथा वह जब चाहता है बदलाव लाता है तो फिर दुनिया इस बदलाव को रोक नहीं सकती।

फिर कुछ लोगों की अनुचित धारणाएँ जो हैं, उनके विषय में भी बयान किया हज़रत मुस्लेह मौऊद ने। कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक व्यक्ति क़ादियान आया उसने कहा कि यदि मिर्ज़ा साहब को कहा जाता है कि आप इब्राहीम हैं, नूह हैं, मूसा हैं, ईसा हैं, मुहम्मद हैं (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तो मुझे भी अल्लाह तआला हर समय कहता है कि तू मुहम्मद है। लोग उसे समझाने लगे तो उसने कहा कि ख़ुदा तआला की आवाज़ मुझे आती है वह स्वयं मुझे कहता है कि तू मुहम्मद है, तुम्हारे तर्क मुझपर क्या प्रभाव डाल सकते हैं, कोई प्रभाव नहीं होगा। जब लोग समझाते समझाते थक गए तो उन्होंने सोचा कि अच्छा यह है कि इन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समाने पेश किया जाए। अतः वह व्यक्ति हुज़ूर की सेवा में लाया गया और उसने कहा कि ख़ुदा तआला मुझे हर समय यह कहता है कि तुम मुहम्मद हो। आपने फ़रमाया कि जब वह मुझे कहता है कि तुम ईसा हो तो ईसा वाले गुण मुझे देता है और जब कहता है कि तुम मूसा हो तो मूसा वाले निशान मुझे देता है और यदि आपको अल्लाह तआला हर समय मुहम्मद कहता है तो क्या वह आपको क़ुरआन करीम के भावार्थ, तथ्य और विवेक भी देता है या नहीं। उसने कहा कि देता तो कुछ नहीं। तो आपने फ़रमाया- देखो सच्चे और झूठे में यही अन्तर होता है यदि कोई व्यक्ति किसी को वास्तव में मेहमान बनाता है तो वह उसे खाने को देता है। परन्तु यदि कोई किसी के साथ उपहास करता है तो वह यूँ ही उसे बुलाकर उसके सामने खाने के ख़ाली बर्तन रख देता है और कहता है कि यह पुलाव है यह ज़र्दा है। ख़ुदा तआला उपहास नहीं करता, शैतान उपहास करता है। यदि आपको मुहम्मद कहा जाता है तो फिर क़ुरआन करीम के तथ्य ,पहचान चिन्ह नहीं दिए जाते तो ऐसा कहने वाला शैतान है, ख़ुदा नहीं। अतः वे लोग जो कई बार कुछ सपनों के कारण कुधारणा में फंस जाते हैं तथा बड़े बड़े दावे करने लग जाते हैं वे वास्तव में शैतान के प्रभाव में होते हैं। ख़ुदा तआला तो जब किसी को कुछ देता है तो उसकी चमक भी दिखाता है, अपने समर्थन को प्रकट भी करता है, निशान प्रकट होते हैं, अल्लाह तआला के क्रियाशील साक्षात्कार उसके साथ काम कर रही होती है। यही हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ देखा और यही आपकी भविष्य वाणी मुस्लेह मौऊद के विषय में जो थी उसे ख़लीफ़तुल मसीह सानी के सम्बंध में पूरा होते देखा तथा यही अहमदिया ख़िलाफ़त की स्थापना के सम्बंध में जो दी थी आपने अल्लाह तआला की क्रियाशील गवाही से उसे हमने सार्थक होते देखा। अल्लाह तआला हर अहमदी के ईमान एंव विवेक में प्रगति अता फ़रमाए तथा वह इन बातों को समझने वाला हो।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रमा साहिबज़ादी अमतुल बारी साहिबा के जनाज़े का ऐलान फ़रमाया जिनका 31 अगस्त 2015 को 87 वर्ष की आयु में निधन हुआ था। इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मुकर्रमा अमतुल बारी बेगम साहिबा, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पोती हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहब की बेटी और हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान की नवासी थीं और सय्यदा अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा तथा नवाब अब्दुल्लाह ख़ान साहब की बहू थीं। उनके मियाँ मुकर्रम अब्बास अहमद ख़ान साहब मरहूम थे और मेरी फूफी भी थीं वे। 17 अक्तूबर 1928 को उनका जन्म हुआ था क़ादियान में। अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलन्द फ़रमाए, मग़फ़िरत का सलूक फ़रमाए। आमीन

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 04.09.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*